P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-XII*August-2016

महात्मा गाँधी : सत्य सिद्धान्त

रवीन्द्र कुमार
अध्यक्ष,
इतिहास विभाग,
सेण्ट ऐण्ड्रयज कालेज,
गोरखपुर,उ0प्र0

सारांश

भारतीय राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, प्रधान रूप में, सन्त, राजनीतिज्ञ, समाज सुधारक और नीतिविद् थे। उनके नैतिक चिन्तन पर उपनिषद, गीता और बुद्ध की शिक्षाओं का स्पष्ट प्रभाव है। गाँधी जो बचपन से ही धार्मिक प्रवृति के थे। उन्हें इस्लाम, ईसाई और जैन धर्म के नैतिक आदर्शो ने अत्याधिक प्रभावित किया है।[1] इसके अतिरिक्त वह जार्ज फाक्स, थोरी, टाल्स्टाय, रस्किन आदि अहिंसा के महान् शिक्षकों के नीतिशास्त्र से भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके हैं। उन्होंने उक्त नीतिविदों के अहिंसा सिद्धान्त को आधुनिक युग में पुनर्जीवित किया है। डा0 वी0 पट्टाभि सीतारमैय्या ने महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। वह कहते है कि "लोगों ने उन्हें बार–बार रहस्यवादी या राजनीतिज्ञ, शान्तिवादी अनुदार, नैतिक ठग, या सिरफिरा भक्की, या सन्त बहशी, एक जिंहोवा,, जोव या लर्ड, एक मसीहा, पैगम्बर व रसूल, या बली कहा है। परन्तु चाहे वह यह थे या नहीं थे, यह स्वयं सिद्ध सत्य है कि युद्धों और खून खराबी द्वारा क्षत–विक्षत युग में, और एक ऐसी दुनिया में जहाँ जंगल का राज्य कायम है और जहाँ राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों का निपटारा हिंसा द्वारा किया जाता है और एक ऐसे समाज में जहाँ जनमत और अन्तारात्मा की आवाज कानून के शिकन्जों में कस दी गई है, उन्होंने एक बार फिर प्रेम और सेवा के, आत्मपीड़न और बलिदान के पुनीत सिद्धांतों के द्वारा विश्वास की ज्वाला प्रज्जवलित की और अन्तरात्मा की आवाज को बुलन्द किया।[2] वस्तुतः, महात्मा गाँधी वर्तमान युग में अहिंसा के दूत हैं। उन्होंने उस सिद्धान्त के आधार पर मानव जीवन की विभिन्न समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया है।

मुख्य शब्द : सन्त, राजनीतिज्ञ, समाज सुधारक, नीतिविद्, सत्य सिद्धान्त।

प्रस्तावना

गाँधी जी के सत्य सिद्धान्त की निजी विशेषता है। वह कहते है कि "मैं सत्य और अहिंसा, अर्थात् प्रेम के सहारे धर्म की ओर अग्रसर होता हूँ। मैं प्रायः अपने धर्म को सत्य का धर्म कहता हूँ। मैं एक लम्बे समय से "ईश्वर सत्य है" कहने की अपेक्षा "सत्य ईश्वर है" कहता आया हूँ।[3] ईश्वर सर्वोच्च शक्ति है। वह जगत का कर्ता, पालक, संहारक होने के साथ ही दयालु भी है। ईश्वर इन सब से ऊपर सत्य है। गाँधी जी के अनुसार, सत्य उच्चतम सिद्धान्त है। सभी धर्म के समर्थक और यहाँ तक कि अनीश्वरवादी भी सत्य का समर्थन करते हैं। गाँधी जी का कथन है कि "ईश्वर के निषेध से तो हम परिचित हैं, किन्तु सत्य के निषेध से नहीं। अत्यधिक अज्ञानी मानव में भी सत्य का कुछ अंश होता है। हम सभी सत्य की चिंगारियाँ है। इन चिन्गारियों की समष्टि ईश्वर अवर्णनीय और अब अज्ञेय सत्य है। हम प्रतिदिन की निरन्तर प्रार्थना के द्वारा उसके समीप होते जाते है।[4]

गाँधी जी अपने धर्म को सत्य का धर्म कहते हैं। वह जीवन पर पड़ने वाले उसके प्रभाव का स्पष्टीकरण प्रस्तुत करते हैं। वह कहते हैं कि "इस धर्म का सामाजिक जीवन पर प्रभाव प्रत्येक के दैनिक सामाजिक आदान–प्रदान में दिखाई देता है, अथवा दिखाई देगा। ऐसे धर्म का सच्चा अनुयायी बनने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को जीवन पर्यन्त अविरत सेवा में स्वयं को भुला देना होगा। अपने आप को जीवन के असीम सागर में लीन किए बिना और उससे अपना एकाकार किये बिना सत्य का साक्षात्कार असम्भव है। अतः, मेरे लिए समाज सेवा से पलायन करना सम्भव नहीं है, इससे परे अथवा पृथक, पृथ्वी पर कोई आनन्द नहीं है। समाज सेवा में जीवन का प्रत्येक क्षेत्र समाविष्ट है। इस योजना में से कुछ निम्न और उच्च नही है, क्योंकि, सभी अनेक दिखाई देने वाले एक है।"[5]

गाँधी जी के अनुसार ईश्वर सत्य और प्रेम रूप है। "ईश्वर नैतिकता है, ईश्वर निर्भयता है, ईश्वर प्रकाश और जीवन का स्रोत है और साथ ही वह इन सबसे उच्च तथा परे भी है।"[6] गाँधी जी कहते हैं कि "हमने प्रभु के, सत्य के हजारों रूपों में दर्शन किये हैं। कभी मैं उसका दर्शन चर्खे में करता हूँ। कभी हिन्दु–मुस्लिम एकता में और कभी छुआ–छूत निवारण में। सभी मनुष्य जन्म से

समान है, और उसमें एकही आत्मा विद्यमान है। अत': "ईश्वर साक्षात्कार का एकमात्र उपाय उसकी सृष्टि में तथा उससे एकत्व दर्शन है।"[7]ऐसी स्थिति में समाज सेवा अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके द्वारा ही पूर्णत्व की प्राप्ति सम्भव है। गाँधी जी कहते हैं कि "मेरी मानव सेवा शरीर से मेरी आत्मा की मुक्ति के अनुशासन का एक अंग है। मेरे लिए मानवतामें प्रेम से होकर ही मोक्ष का मार्ग जाता है। मैं सभी जीवित प्राणियों से अपना एकत्व स्थापित करना चाहता हूँ।"[8] अतः, स्पष्ट है कि सत्य के साक्षात्कार, अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति के लिए समाज सेवा की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका है।

गाँधी जी के अनुसार व्यक्ति को व्यापक आत्मा से तादात्म्य स्थापित करना तथा स्थित प्रज्ञा की ओर निरन्तर अग्रसर होते रहना चाहिए। दूसरे शब्दों में, उसे स्वयं को व्यापक आत्मा द्वारा शासित स्वीकार करना चाहिए। व्यक्ति समाज की सदस्यता ग्रहण किए हुए है और इस कारण उसे अपनी आवश्यकताओं के अनुकूल वस्तुओं का उत्पादन करने के साथ ही, शासन की बागडोर अपने हाथों में लेना चाहिए। यही यथार्थ में सत्यता अर्थात् स्वराज्य है। स्वराज्य से गाँधी जी का तात्पर्य अपने शरीर और देश पर अपनी आत्मा तथा अपने देश के लोगों का शासन है। स्थूल रूप में उनके इस स्वराज्य की व्यंजना "स्वदेशी" के प्रत्यय के माध्यम से होती है।

स्वदेशी अथवा देश सेवा को भी गाँधी जी ने नैतिक दृष्टि से पर्याप्त महत्व प्रदान किया है। उनके अनुसार स्वदेशी व्रत का अर्थ स्वार्थवृति का त्याग करके तन, मन और धन से राष्ट्र की सेवा करना, अपने देश में रहना तथा अपने देश में निर्मित वस्तुओं का सेवन करना है। गाँधी जी ने इसे एक वांछनीय लक्ष्य के रूप में स्वीकार किया है। इस लक्ष्य की प्राप्ति में पर्याप्त त्याग की आवश्यकता है। स्वदेशी व्रत का पालन देश को आत्म निर्भर बनाता है और इससे स्वदेश प्रेम का गुण पुष्पित होता है जो स्वराज्य की ओर ले जाता है।

उद्देश्य

महात्मा गाँधी के सत्य सिद्धान्त की एक अलग ही विशेषता देखने को मिलती है। उनके अनुसार धर्म सत्य का धर्म है। वह ईश्वर सत्य है कहने की अपेक्षा सत्य ईश्वर है कहते आये है। महात्मा गाँधी के अनुसार ईश्वर सत्य और प्रेम रूप है। गाँधी जी कहते है कि ''हमने प्रभु के सत्य के हजारों रूपों मे दर्शन किये है। कभी मै उसका दर्शन चरखे में करता हूँ। हिन्दू–मुस्लिम एकता में और कभी छूआ–छूत निवारण में।'' सभी मनुष्य जन्म से समान है, और उनमें एक ही आत्मा विद्यमान है।

निष्कर्ष

गाँधी जी जिस आदर्श सामाजिक व्यवस्था की ओर संकेत करते है उसमें कुछ भी अविकसित नहीं होगा। समाज के दो पक्ष है– आध्यात्मिक पक्ष और सामाजिक पक्ष सर्वोदय के सामाजिक पक्ष से यह व्यक्त होता है कि शरीर और आत्मा एक–दूसरे के अधीन न हो, अपितु उनका स्वतन्त्र विकास हो। सामाजिक पक्ष से संकेत मिलता है कि सम्पूर्ण समाज का विकास हो अर्थात सभी धर्मो, भाषाओं, कलाओं, विचारों का विकास हो। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर महात्मा गांधी जी ने सर्वोदय के द्वारा राम राज्य की स्थापना की योजना बनाई थी जिसमें सम्पूर्ण मानव जाति को भौतिक, दैहिक एवं आत्मिक सुख उपलब्ध होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. "Gandhi was intensely religious from childhood. The ethical ideals of Islam, Christianity and Jainism had deeply influenced him."–K. Damodaran : Indian Thought; P. 436.
2. B. Pattabisiaramaya : Gandhi aur Gandhivada; P. 19
3. "I am being led to my religion through Truth and Non-Violence, i.e. Love in the broades sense. I often describe my religion as Religion of Truth. Of late, instead of saying God is Truth I have being saying Truth is God"**-** M.K. Gandhi : Contmporary Indian Philosphy; P. 21.**-** (Ed : S. Radhakrishanan & J. H. Muirhead)
4. "Denial of God we have known. Denial of Truth we have not known. The most ignorant among mankind have some truth in them. We are all sparks of truth, the sum total of these sparks is indescribable, as yet, unknown Truth, which is God. I am being daily led nearer to it by constant Prayer.**-** Ibid, P. 21.
5. "The bearing of this religion on social life is, or has to be, seen in one's daily social contact. To be true to such religion one has to lose one self in continuous and continuing service of all life. Realisation of truth is impossible without a complete merging of one self in, and identification with, this limitless ocean of life in, and identification with, this limitless ocean of life. Hence, for me, there is no escape from social service, there is no happiness on earth beyond or a part from it. Social service here much taken.- Ibid. P.21
6. "God is ethics and morality, God is fearlessness, God is the source of light and life, and all the same. He is higher than and beyond all these. He is even the atheism of the atheist."**-** M.K. Gandhi : Young India; March 3. 1925.
7. "The only way to find God is to see Him in His creation and to be one without it."**-**M.K. Gandhi: Harijan; August 29, 1936.
8. "My service to my people is part of the discipline to which I subject myself in order to free my soul from the bonds of the flesh. For me the road to salvation lies through love of humanity. I want to identify myself with every thing that lives".**-** M.K. Gandhi : Young India; April 4, 1920.